दिनांक- 17.7.2020

आदर्शी प्रथम खण्ड सामान्य/प्रतिष्ठा
अतिरिक्त प्रश्नपत्र (संस्कृत व्याकरण)

कारक प्रकरणम्

षष्ठी विभक्ति

सूत्र- षष्ठी शेषे — कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान एवं अधिकरण कारक से भिन्न (शेष) में षष्ठी विभक्ति होती है। क्रिया का साक्षात अन्वय नहीं रहने के कारण शेष कहा जाता है. इसे ही सम्बन्ध कारक कहा जाता है।

यथा- राज्ञः पुरुषः आगच्छति- राजा का आदमी आता है।

सूत्र- षष्ठी हेतुप्रयोगे — जब हेतु शब्द का प्रयोग होता है तो जो शब्द कारण या प्रयोजन रहता है वह और हेतु दोनों में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा—

(i) अल्पस्य हेतोः बहु हातुमिच्छति- वह थोड़े के लिए बहुत का त्याग करता है।
(ii) अयं जनः देशस्य हेतोः प्राणोत्सर्गं करोति- यह आदमी देश के लिए प्राणोत्सर्ग करता है।

सूत्र- यतश्च निर्धारणम्

अर्थ- समुदाय से किसी की पृथक विशेषता बतलायी जाय, उसमें षष्ठी एवं सप्तमी विभक्ति होती है। यथा—

नदीनां नदीषु वा गङ्गा श्रेष्ठा अस्ति- नदियों में गङ्गा श्रेष्ठ है।

कवीनां कविषु वा कालिदासः श्रेष्ठः- कवियों में कालिदास श्रेष्ठ है।

सूत्र- कर्तृकर्मणोः कृति- कृत् प्रत्ययान्त शब्दों के योग में अनुक्त कर्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा—

(i) इयं कालिदासस्य कृतिरस्ति। यह कालिदास की कृति है।
(ii) बालानां रोदनं बलम् - बच्चों का रोना ही बल है।

सूत्र- षष्ठी चानादरे — किसी का अनादर (तिरस्कार) करके यदि कोई कर्म किया जाय तो उसमें षष्ठी एवं सप्तमी विभक्ति होती होती है। यथा—

रुदतो बालकस्य माता गतवती- (बालक को रोता छोड़कर
अथवा- रुदति बालके माता गतवती   माँ चली गई)

सूत्र- दिवस्तदर्थस्य — दिव् धातु के साथ जुआ खेलना अर्थ में कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है। यथा—

कृष्णः शतस्य दीव्यति- कृष्ण सौ रुपये का जुआ खेलता है। किन्तु पूजा अर्थ में दिव् धातु के साथ द्वितीया विभक्ति होती है। यथा— कृष्णः हरिं दीव्यति (कृष्ण हरि की पूजा करता है)

→

सप्तमी विभक्ति:

सूत्र- आधारोऽधिकरणम् - कर्ता या कर्म कारक द्वारा क्रिया का आधार अधिकरण कारक होता है। यथा—
वटे आस्ते मुनिः मुनि चटाई पर बैठते हैं।

सूत्र- सप्तम्यधिकरणे च - अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है।

आधार तीन प्रकार के होते हैं—

1. औपश्लेषिक - जिसमें आधेय का स्थायित्व नहीं हो।
यथा— विद्यालये छात्राः पठन्ति विद्यालय में छात्र पढ़ते हैं।

(ii) वैषयिक - आधेय का व्याप्य-व्यापक भाव लक्षित होना वैषयिक आधार कहा जाता है। यथा—
तस्य मोक्षे इच्छा अस्ति।

(iii) अभिव्यापक- आधेय का जब व्याप्य-व्यापक भाव सम्बन्ध सम्पूर्णता से परिलक्षित हो तो उसमें अभिव्यापक आधार माना जाता है। यथा - तिलेषु तैलम्।

सूत्र— यस्य च भावेन भावलक्षणम् - एक क्रिया के समाप्त हो जाने पर दूसरी क्रिया की प्रतीति होने के अर्थ में सप्तमी विभक्ति होती है।
यथा - उदिते सूर्ये सः प्रतिदिनं जागर्ति
(सूर्य के उदय होने पर वह नित्य जागता है)
रामे वनं गते मृतो दशरथः राम के वन जाने पर दशरथ मर गये।

सूत्र - अधिशीङ्स्थासां कर्म - अधि पूर्वक यदि शीङ्, स्था और आस् धातु का प्रयोग हो तब इन धातुओं का आधार कर्मकारक होता है। यथा — बालकः शय्याम् अधिशेते।
(बालक बिछावन पर सोता है)
योगी शिलापट्टम् अध्यास्ते - योगी चट्टान पर बैठता है।
राजा सिंहासनम् अधितिष्ठति राजा सिंहासन पर बैठा है।

सुरेश पाण्डेय
प्रधानाचार्य
सि० संस्कृत महाविद्यालय
पचनिया, भोजपुर

ता: 17.7.2020